Std-VI Subject-Hindi

Summative Assessment Assignment-2(2020-21)

(अपठित–विभाग)

प्र–१ अपठित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) मानव जाति को अन्य जीवधारियों से अलग करके महत्त्व प्रदान करने वाला जो एकमात्र गुरु है, वह है उसकी विचार-शक्ति। मनुष्य के पास बुधि है, विवेक है, तर्कशक्ति है अर्थात उसके पास विचारों की अमूल्य पूँजी है। अपने सविचारों की नींव पर ही आज मानव ने अपनी श्रेष्ठता की स्थापना की है और मानव-सभ्यता का विशाल महल खड़ा किया है। यही कारण है कि विचारशील मनुष्य के पास जब सविचारों का अभाव रहता है तो उसका वह शून्य मानस कुविचारों से ग्रस्त होकर एक प्रकार से शैतान के वशीभूत हो जाता है। मानवी बुधि जब सद्भावों से प्रेरित होकर कल्याणकारी योजनाओं में प्रवृत्त रहती है तो उसकी सदाशयता का कोई अंत नहीं होता, किंतु जब वहाँ कुविचार अपना घर बना लेते हैं तो उसकी पाशविक प्रवृत्तियाँ उस पर हावी हो उठती हैं। हिंसा और पापाचार का दानवी साम्राज्य इस बात का द्योतक है कि मानव की विचार-शक्ति, जो उसे पशु बनने से रोकती है, उसका साथ देती है।

(क) मानव जाति को महत्त्व देने में किसका योगदान है?

- विवेक और विचारों का

(ख) विचारों की पूँजी में शामिल नहीं है

- उत्साह

(ग) मानव में पाशविक प्रवृत्तियाँ क्यों जागृत होती हैं?

- कुविचारों के कारण

(घ) "मनुष्य के पास बुधि है, विवेक है, तर्कशक्ति है' रचना की दृष्टि से उपर्युक्त वाक्य है

- सरल

(ङ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

- विवेक शक्ति

2) विद्यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विद्यार्थी काल में बालक में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं। इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है। यदि यह नींव दृढ़ बन जाती है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है। यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसका स्वास्थ्य सुंदर बनता है। यदि मन लगाकर अध्ययन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है। जिस वृक्ष को प्रारंभ से सुंदर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है। इसी प्रकार विद्यार्थी काल में जो बालक श्रम, अनुशासन, समय एवं नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है। सभ्य नागरिक के लिए जिन-जिन गुणों की आवश्यकता है, उन गुणों के लिए विद्यार्थी काल ही तो सुंदर पाठशाला है। यहाँ पर अपने साथियों के बीच रहकर वे सभी गुण आ जाने आवश्यक हैं, जिनकी कि विद्यार्थी को अपने जीवन में आवश्यकता होती है।

1)जीवन की आधारशिला किस काल को कहा जाता है?

उत्तरः जीवन की आधारशिला विद्यार्थी जीवन को कहा गया है।

2)गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरः गद्यांश का शीर्षक है-जीवन का निर्माण काल विद्यार्थी जीवन।

3)मानव जीवन के लिए विद्यार्थी जीवन की महत्ता स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः मानव जीवन के लिए विद्यार्थी जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस काल में अच्छे गुणों एवं संस्कारों की दृढ़ नींव पड़ जाती है, तो जीवन सुखमय बन जाता है। इस काल में सीखी बातें जीवन भर साथ रहती हैं।

4)छोटे वृक्ष के पोषण का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है और क्यों?

उत्तरः छोटे वृक्ष के पोषण का उल्लेख विद्यार्थी जीवन के संदर्भ में किया गया है, क्योंकि जिस प्रकार अच्छा पोषण पाकर पौधा वृक्ष बनकर फल-फूल देता है, उसी प्रकार विद्यार्थी जीवन में पड़े अच्छे संस्कार उसे अच्छा इनसान बनाते हैं।

5)विद्यार्थी जीवन की तुलना पाठशाला से क्यों की गई है?

उत्तरः विदयार्थी जीवन की तुलना पाठशाला से इसलिए की गई है, क्योंकि जिस प्रकार छात्र ज्ञान प्राप्त करता है उसी प्रकार विद्यार्थी जीवन में बालक जीवनोपयोगी गुण ग्रहण करता है।

3) हमारे देश के त्योहार चाहे धार्मिक दृष्टि से मनाए जा रहे हैं, या नए वर्ष के आगमन के रूप में; फसल की कटाई एवं खलिहानों के भरने की खुशी में हो या महापुरुषों की याद में; सभी अपनी विशेषताओं एवं क्षेत्रीय प्रभाव से युक्त होने के साथ ही देश की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता और अखंडता को मज़बूती प्रदान करते हैं। ये त्योहार जहाँ जनमानस में उल्लास, उमंग एवं खुशहाली भर देते हैं, वहीं हमारे अंदर देश-भक्ति एवं गौरव की भावना के साथ-साथ, विश्व-बंधुत्व एवं समन्वय की भावना भी बढ़ाते हैं। इनके द्वारा महापुरुषों के उपदेश हमें बार-बार इस बात की याद दिलाते हैं कि सद्विचार एवं सद्भावना द्वारा ही हम प्रगति की ओर बढ़ सकते हैं। इन त्योहारों के माध्यम से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि वास्तव में धर्मों का मूल लक्ष्य एक है, केवल उस लक्ष्य तक पहुँचने के तरीके अलग-अलग हैं।

1)उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरः गद्यांश का शीर्षक है-त्योहार और मानवजीवन।

2)त्योहारों से मनुष्य को क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तरः त्योहारों से मनुष्य को यह शिक्षा मिलती है कि सभी धर्मों का लक्ष्य एक है, जहाँ पहुँचने के तरीके अलग-अलग हैं।

3)हमारे देश में त्योहार मनाने के मुख्य आधार क्या हैं ?

उत्तरः हमारे देश में त्योहार मनाने के अनेक आधार हैं। ये त्योहार कभी धार्मिक दृष्टि से मनाए जाते हैं, तो कभी नववर्ष के आगमन की खुशी में या फ़सल करने और खलिहान भरने की खुशी इनके मनाने का आधार हो सकता है।

4)त्योहारों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ?

उत्तरः त्योहार हमारे जीवन को उमंग एवं खुशहाली से भर देते हैं तथा हमारे मन में एकता, अखंडता, विश्व-बंधुत्व, देश भक्ति एवं आपसी समन्वय की भावना भी बढ़ाते हैं।

5) त्योहारों और महापुरुषों के उपदेश में समानता गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः त्योहारों और महापुरुषों के उपदेशों में समानता यह है कि, ये दोनों ही हमें यह याद दिलाते हैं कि अच्छे विचार और अच्छी भावना रखने से ही हम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।

अपठित पदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

4) तेरी पाँखों में नूतन बल,
कंठों में उबला गीत तरल,
तू कैसे हाय, हुआ बंदी, वन-वन के कोमल कलाकार।
क्या भूल गया वह हरियाली!
अरुणोदय की कोमल लाली?
मनमाना फुर-फुर उड़ जाना, नीले अंबर के आर-पार!
क्या भूल गया बंदी हो के
सुकुमार समीरण के झोंके
जिनसे होकर तू पुलकाकुल बरसा देता था स्वर हज़ार?
रे, स्वर्ण-सदन में बंदी बन
यह दूध-भात का मृदु भोजन
तुझको कैसे भा जाता है, तज कर कुंजों का फलाहार!
तू मुक्त अभी हो सकता है,
अरुणोदय में खो सकता है,
झटका देकर के तोड़ उसे, पिंजरे को कर यदि तार-तार!
पंछी! पिंजरे के तोड़ द्वार।

(क) कवि को किस बात का दुख है?

उत्तर- कवि पक्षी के पिंजरे में कैद हो जाने पर दुखी है क्योंकि उसने पक्षी को सदैव खुले आसमान में उड़ते और मधुर गीत गाते सुना है और अब वह पिंजरे में कैद मौन हो गया है।

(ख) कवि पंछी को क्या-क्या याद दिला रहा है?

उत्तर- प्रकृति में फैली हरियाली, सुबह-सुबह चंद्रमा के उदित होने पर चारों ओर फैली लालिमा, नीले अंबर के आर-पार उड़ने का आनंद तथा हवा के मधुर झोंकों की याद कवि पंछी को दिला रहा है।

(ग) कवि पंछी को किस बात की उम्मीद दिलाकर आगे बढ़ने को कह रहा है?

उत्तर- कवि वनों के सुख की याद दिलाकर पक्षी को यह उम्मीद दिला रहा है कि यदि वह चाहे तो मुक्त होकर सुबह की लालिमा में खो सकता है। लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए उसे साहस के साथ पिंजरे का द्वार तोड़ना होगा।

5) हम जंग न होने देंगे!
विश्व शांति के हम साधक हैं,
जंग न होने देंगे!
कभी न खेतों में फिर खूनी खाद फलेगी,
खलिहानों में नहीं मौत की फ़सल खिलेगी,
आसमान फिर कभी न अंगारे उगलेगा,
एटम से फिर नागासाकी नहीं जलेगी
युद्धविहीन विश्व का सपना भंग न होने देंगे!
हथियारों के ढेरों पर जिनका है डेरा,
मुँह में शांति, बगल में बम, धोखे का फेरा,
कफ़न बेचने वालों से कह दो चिल्लाकर,
दुनिया जान गई है उनका असली चेहरा,
कामयाब हों उनकी चालें, ढंग न होने देंगे!
हमें चाहिए शांति, ज़िंदगी हमको प्यारी,
हमें चाहिए शांति, सृजन की है तैयारी,

हमने छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी,
हरी-भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे!

प्रश्नः 1. कवि किस तरह की दुनिया चाहता है ?
उत्तर: कवि ऐसी दुनिया चाहता है, जहाँ युद्ध का नामोनिशान न हो और सर्वत्र शांति हो।
प्रश्नः 2. 'खलिहानों में नहीं मौत की फ़सल खिलेगी' का आशय क्या है?
उत्तर: 'खलिहानों में नहीं मौत की फ़सल खिलेगी' का आशय है कि युद्ध अब अपार जनसंहार का कारण नहीं बनेगा।
प्रश्नः 3. 'कफ़न बेचने वाले' कहकर कवि ने किनकी ओर संकेत किया है?
उत्तर: कफ़न बेचने वालों कहकर कवि ने उन देशों की ओर संकेत किया है जो घातक अस्त्र-शस्त्र की खरीद-फरोख्त करते हैं।
प्रश्नः 4. 'एटम' के माध्यम से कवि ने क्या याद दिलाया है ? उसका सपना क्या है ?
उत्तर: एटम के माध्यम से कवि ने अमेरिका द्वारा नागासाकी और हिरोशिमा पर गिराए गए बम की ओर संकेत किया है। उसका सपना यह है उसने युद्धरहित दुनिया का स्वप्न देखा है, वह किसी भी दशा में नहीं टूटना चाहिए।
प्रश्नः 5. कवि ने किसके विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है? उसका यह कार्य कितना उचित है?
उत्तर: कवि ने भूख और बीमारी से जंग छेड़ रखी है। इसका कारण यह है कि कवि को शांतिपूर्ण जीवन पसंद है। वह नवसृजन की तैयारी में व्यस्त है। इस जंग में वह विश्व को भागीदार बनाकर दुनिया में खुशहाली देखना चाहता है।

6) जिसके निमित्त तप-त्याग किए, हँसते-हँसते बलिदान दिए,
कारागारों में कष्ट सहे, दुर्दमन नीति ने देह दहे,
घर-बार और परिवार मिटे, नर-नारि पिटे, बाज़ार लुटे
आई, पाई वह 'स्वतंत्रता', पर सुख से नेह न नाता है –
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।
सुख, सुविधा, समता पाएँगे, सब सत्य-स्नेह सरसाएँगे,
तब भ्रष्टाचार नहीं होगा, अनुचित व्यवहार नहीं होगा,
जन-नायक यही बताते थे, दे-दे दलील समझाते थे,
वे हुई व्यर्थ बीती बातें, जिनका अब पता न पाता है।
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।
शुचि, स्नेह, अहिंसा, सत्य, कर्म, बतलाए 'बापू' ने सुधर्म,
जो बिना धर्म की राजनीति, उसको कहते थे वह अनीति,
अब गांधीवाद बिसार दिया, सद्भाव, त्याग, तप मार दिया,
व्यवसाय बन गया देश-प्रेम, खुल गया स्वार्थ का खाता है –
क्या यही 'स्वराज्य' कहाता है।
प्रश्नः 1. वीरों ने किसके लिए तप त्याग करते हुए अपना बलिदान दे दिया?
उत्तर: वीरों ने देश को आज़ादी दिलाने के लिए तप-त्याग करते हुए अपना बलिदान दे दिया।
प्रश्नः 2 'सुख-सुविधा समता पाएँगे' में निहित अलंकार का नाम बताइए।
उत्तर: 'सुख-सुविधा समता पाएँगे' में अनुप्रास अलंकार है।
प्रश्नः 3. 'क्या यही स्वराज्य कहाता है' कहकर कवि ने व्यंग्य क्यों किया है ?
उत्तर: 'क्या यही स्वराज्य कहाता है' कहकर कवि ने इसलिए व्यंग्य किया है क्योंकि हमारे जननायकों ने ऐसी स्वतंत्रता का सपना नहीं देखा था।

प्रश्नः 4. हमारे जननायकों ने किस तरह की स्वतंत्रता का स्वप्न देखा था? वह स्वप्न कहाँ तक पूरा हो सका।

उत्तरः हमारे जननायकों द्वारा स्वतंत्रता का सपना देखा गया था उसमें सभी को सुख-सुविधा और समानता पाने तथा मिल-जलकर प्रेम से रहने, भ्रष्टाचार मुक्त भारत में सबके साथ एक समान व्यवहार करने के सुंदर दृश्य की कल्पना की गई थी।

प्रश्नः 5. बापू अनीति किसे मानते थे? उनकी राजनीति की आज क्या स्थिति है?

उत्तरः बापू उस राजनीति को अनीति कहते थे जिसमें पवित्रता, प्रेम, अहिंसा शांति जैसे सुधर्म का मेल न हो। उनकी राजनीति में अब गांधीवाद, सद्भाव, त्याग, तप आदि मर चुका है। देश-प्रेम के नाम पर व्यवसाय किया जा रहा है और सर्वत्र स्वार्थ का बोलबाला है।

(लेखन-विभाग)

प्र-। निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए।

1) समाचार पत्रों के लाभ

अगर हम समाचार पत्र के बारे में ऐसा कहें कि यह हमारे सुबह की पहली जरूरत है, तो यह गलत नहीं होगा हममें से कुछ लोग तो ऐसे है, जिन्हें बिना समाचार पत्र पढे सुबह की चाय पीना भी पसंद नहीं याद कीजिये दीपावली और होली का दूसरा दिन जब समाचार पत्र की अनुपस्थिति में हमारी सुबह सूनि-सूनि सी होती है साल में यही दो-तीन दिन होते है, जब हमें सुबह समाचार पत्र प्राप्त नहीं होता, अन्यथा अन्य सभी दिन हर सुबह बहुत ही अनुशासित ढंग से हमें हमारा समाचार पत्र प्राप्त होता है चाहे वह बारिश भरी रात हो या ठंड से भरी सुबह हमें हमारा समाचार पत्र रोज की ताजा खबरों के साथ अपने घर की दहलीज पर मिल ही जाता है।

अगर हम समाचार पत्रों का इतिहास जानने की कोशिश करे तो यह बहुत ही प्राचीन है, कहा जाता है कि इसकी शुरवात कोलकाता मे हुई थी पहले समाचार पत्र एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित था, परंतु नित नये आविष्कारों के चलते सूचना का आदान प्रदान तुरंत संभव हो सका साथ ही साथ छपाई कला में भी दक्षता आई आजकल कई ऐसी मशीने उपलब्ध है, जिसकी सहायता से चंद घंटो मे हजारो की संख्या में प्रतियाँ तैयार हो जाती है इन सभी आविष्कारों के चलते समाचार पत्र एक क्षेत्र तक सीमित न रहकर देश विदेशो तक पहुँच गया है।

हम घर बैठे दुनिया के हर देश हर कोने की जानकारी समाचार पत्र मे पढ़ सकते है आज कल पाठक की सुविधा का ध्यान रखते हुये हर भाषा में समाचार पत्र उपलब्ध है, जिसमें खेल कूद, बिज़नेस, राजनीति, शासन प्रशासन आदि कई सारी जानकारी इसमें पाठक को उपलब्ध कराई जाती है आजकल कई समाचार पत्रों का प्रकाशन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी होता है, जिससे देश विदेश कि जानकारी मिलती है समाचार पत्रों में कुछ पेज किसी क्षेत्र विशेष के भी होते है, जिसमें वहाँ की समस्याँ और जानकारी दोनों प्रकाशित की जाती है|

सबसे पहला समाचार पत्र वाइसराय हिक्की द्वारा "बंगाल गज़ट" नाम से बंगाल में शुरू किया गया था हालाँकि इसके पहले भी कई पन्नेनुमा पत्रों का उपयोग सूचनाओ के आदान प्रदान के लिए किया जाता था परंतु बंगाल गज़ट ही सबसे पहला पूर्ण रुपेन अखबार है, क्युकी पहले अखबार अग्रेज़ी भाषा मे होते थे, तो यह जनसमान्य के लिए उपयोगी नहीं थे, यह केवल अंग्रेज़ो के उपयोग का साधन मात्र थे सबसे पहला हिन्दी समाचार पत्र सन 1826 मे "उदंम मार्तड" नाम से प्रकाशित हुआ यह एक साप्ताहिक अखबार था, परंतु इसे 1827 में ही दबाव के चलते बंद करना पडा इसके बाद अंग्रेज़ो के

विरूध्द संघर्ष करते हुये बंगालदूत, समाचार सुधा वर्षण, केसरी, वंदे मातरम आदि समाचार पत्रों का संपादन किया गया।

समाचार पत्रों में रोजमर्रा के समाचारों के अतिरिक्त साहित्य, धर्म, खेलकूद, राजनीति, व्यापार एवं चलचित्र आदि के विषय में जानकारी और सूचनाओं के साथ साथ लेख भी छापे जाते हैं।ये सभी समाचार पत्र हमारे लिये बहुत उपयोगी हैं। यह हमारे ज्ञान में वृद्धि करने के साथ साथ हमारा मनोरंजन भी करते हैं। समाचार पत्रों के माध्यम से विज्ञापनों द्वारा नये नये उत्पादों की जानकारी आज जनता तक आसानी से पहुंच जाती है। लोकतंत्र में समाचार पत्र का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अतः हम सभी को प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालनी चाहिये।

2) निबंध- पुस्तको का महत्व

पुस्तकें हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती हैं क्योंकि पुस्तकों से हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है। पुस्तकें हमारी अच्छी मित्र होती हैं एक पुस्तक जितना वफ़ादार और कोई नहीं होता है। एक पुस्तक ज्ञान तो हमें देती ही हैं इससे हमारा अच्छा ख़ासा मनोरंजन भी हो जाता है। इसीलिए पुस्तकों को हमारा मित्र कहना गलत नहीं होगा।पुस्तकें तो प्रेरणा का भंडार होती हैं इन्हें पढ़कर ही हमें जीवन में महान कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। पुस्तक अपने विचारों और भावनाओं को दूसरों तक पहुंचाने का सबसे अच्छा साधन है।

प्राचीन समय में पुस्तकें आसानी से प्राप्त नहीं होती थी उस समय पुस्तक की प्रिटिंग करना आसान काम नहीं था। उस वक्त ज्ञान का माध्यम केवल वाणी के द्वारा ही किया जाता था। आज के आधुनिक युग में प्रिंटिंग का आविष्कार होने से पुस्तकें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। हर विषय पर अब जानकारियां हर भाषा में पुस्तकों में प्रकाशित होने लगी हैं।कुसंगति में रहने से तो अच्छा होता है के आप अकेले रहकर पुस्तक पढ़ें जिससे आपको गहरे ज्ञान की प्राप्ति होगी और कुसंगति में रहकर तो आपको बुरे विचार हासिल होंगे। पुस्तक पढने से आपके मन का अन्धकार खत्म होता है और आपके मन में प्रकाश का उजाला पैदा होता है और बदले में हमसे यह कुछ लेती भी नहीं।

पुस्तकें प्रेरणा की भंडार होती हैं | उन्हें पढ़कर जीवन में कुछ महान कर्म करने की भावना जागती है | महात्मा गाँधी को महान बनाने में गीता, टालस्टाय और थोरो का भरपूर योगदान था | भारत की आज़ादी का संग्राम लड़ने में पुस्तकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी | मैथलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती पढ़कर कितने ही नौजवानों ने आज़ादी के आदोंलन में भाग लिया था | प्रत्येक छात्र को अच्छी और शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण पर गहरा असर पड़ता है। इस पुस्तक को पढने से धर्म के मार्ग पर चलने की सीख मिलती है। इसलिए मेरी दृष्टि में "रामचरितमानस" बहुत ही अच्छी पुस्तक है। "रामचरितमानस" में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र का वर्णन है। राम एक आदर्श पुरुष थे। वे चौदह वर्ष तक लक्ष्मण व सीताजी सहित वन में रहे। वे एक आदर्श राजा थे। उन्होंने प्रजा की बातों को बहुत महत्व दिया। राम का शासनकाल आदर्शपूर्ण था, इसलिए उनका शासन राम राज कहलाता है। सीता एक आदर्श नारी थीं। लक्ष्मण की भातृभक्ति प्रशासंनीय है।

पुस्तकें चरित्र निर्माण का सबसे अच्छा साधन होती हैं अच्छे विचारों , प्रेरणादायक कहानियों से भरपूर किताबों से देश की युवा पीढ़ी को एक नयी दिशा दी जा सकती है। इनसे ही देश में एकता का पाठ पढ़ाया जा सकता है। इसीलिए पुस्तकें ज्ञान की बहती हुई गंगा हैं जो कभी नहीं थमती। किन्तु देखा गया है के कुछ पुस्तकें ऐसी भी होती हैं जो हमारा गलत मार्ग दर्शन करती हैं इसीलिए हमें ऐसी पुस्तकों को पढने से बचना चाहिए हमेशा ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक पुस्तकें ही पढनी चाहिए |

3) होली

होली हर साल फाल्गुन मार्च के महीने में महीने में विभिन्न प्रकार के रगों के साथ मनाई जाती है। सभी घरों में तरह तरह के पकवान बनाये जाते हैं। होली हिंदुओं के एक प्रमुख त्योहार के रूम में जाना जाता है। होली सिर्फ हिन्दुओं ही नहीं बल्कि सभी समुदाय के लोगों द्वारा उल्लास के साथ मनाया जाता है। होली का त्योहार लोग आपस में मिलकर, गले लगकर और एक दूसरे को रंग लगाकर मनाते हैं। इस दौरान धार्मिक और फागुन गीत भी गाये जाते हैं। इस दिन पर हम लोग खासतौर से बने गुजिया, पापड़, हलवा, आदि खाते हैं। रंग की होली से एक दिन पहले होलिका दहन किया जाता है।

होली का त्यौहार मनाने के पीछे एक प्राचीन इतिहास है। प्राचीन समय में हिरण्यकश्यप नाम के एक असुर हुआ करता था। उसकी एक दुष्ट बहन थी जिसका नाम होलिका था। हिरण्यकश्यप स्वयं को भगवान मानता था। हिरण्यकश्यप के एक पुत्र थे जिसका नाम प्रह्लाद था। वे भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त थे। हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु के विरोधी था। उन्होंने प्रह्लाद को विष्णु की भक्ति करने से बहुत रोका। लेकिन प्रह्लाद ने उनकी एक भी बात नहीं सुनी। इससे नाराज़ होकर हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को जान से मारने का प्रयास किया। इसके लिए हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका से मदद मांगी। क्योंकि होलिका को आग में न जलने का वरदान मिला हुआ था। उसके बाद होलिका प्रह्लाद को लेकर चिता में बैठ गई लेकिन जिस पर विष्णु की कृपा हो उसे क्या हो सकता है और प्रह्लाद आग में सुरक्षित बचे रहे जबकि होलिका उस आग में जल कर भस्म हो गई।

यह कहानी ये बताती है कि बुराई पर अच्छाई की जीत अवश्य होती है। आज भी सभी लोग लकड़ी, घास और गोबर के ढ़ेर को रात में जलाकर होलिका दहन करते हैं और उसके अगले दिन सब लोग एक दूसरे को गुलाल, अबीर और तरह-तरह के रंग डालकर होली खेलते हैं।भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में अलग अलग तरीके से मनाया जाता है। आज भी ब्रज की होली सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। लठमार होली जो कि बरसाने की है वो भी काफ़ी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ पुरुषों को लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से मारती हैं। इसी तरह मथुरा और वृंदावन में भी १५ दिनों तक होली का पर्व मनाते हैं।

होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है इस त्यौहार से सीख लेते हुए हमें भी अपनी बुराइयों को छोड़ते हुए अच्छाई को अपनाना चाहिए। इस त्यौहार से में एक और सीखने को मिलती है कि कभी भी हमें अहंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि अहंकार हमारे सोचने समझने की शक्ति को बंद कर देता है।हमें होली का त्यौहार अपने परिवार और दोस्तों के साथ खूब धूमधाम से मनाना चाहिए।

प्र–2 निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखिए।

1)पर्यावरण में हो रही क्षति के सन्दर्भ में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का निवेदन करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

424, शालीमार बाग,
दिल्ली।
दिनांक 16 मार्च, 2020
सेवा में,
सम्पादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
दिल्ली।
विषय- अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के सम्बन्ध में।
महोदय,
इस पत्र के माध्यम से मैं प्रशासन, सरकार व आम जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हूँ कि वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई व कारखानों से निकलने वाले धुएँ के कारण पर्यावरण को अत्यधिक क्षति हो रही है। यद्यपि वन महोत्सव के अवसर पर वन विभाग द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम आरम्भ किया जाता है तथा अनेक वृक्ष भी लगाए जाते हैं, परन्तु उनकी देखभाल नहीं की जाती जिसके कारण पर्यावरण में प्रदूषण का खतरा बढ़ता जा रहा है।

मेरा सभी से निवेदन है कि हम सभी को मिलकर अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे जिससे हम पर्यावरण को सुरक्षित कर पाएँगे।

धन्यवाद।
भवदीय
राहुल

2)अपनी परीक्षा के विषय में पिताजी को पत्र ।

परीक्षा भवन
गुवाहाटी
'अ' नगर
16.1.2020
पूज्यवर पिताजी,
सादर चरण स्पर्श ।
ईश्वर की कृपा से मैं यहाँ सकुशल हूँ । आपकी कुशलता की आशा है । आपका पत्र मिला, जिसमें आपने मेरी परीक्षा के विषय में जानना चाहा था । मेरी परीक्षाएँ कल ही समाप्त हुई हैं । सभी विषयों के प्रश्न-पत्र (Question papers) बड़े सरल (Easy) थे ।
मैंने पूरा प्रयत्न किया कि सभी प्रश्नों के उत्तर ठीक-ठाक लिखूँ ताकि अपनी कक्षा में सबसे अधिक अंक पा सकूँ । पिछली बार की जाँच परीक्षा में भी मेरे अंक अच्छे रहे, लेकिन हिन्दी में कुछ कम अंक आने के कारण मैं अपनी कक्षा में तीसरे स्थान पर रहा ।
इसीलिए इस बार परीक्षा से पहले मैंने और अधिक अच्छी तैयारी की थी । आशा है, इस बार मैं निश्चय ही प्रथम स्थान प्राप्त कर सकूँगी । माताजी को मेरा सादर प्रणाम । भाई-बहनों को मेरा प्यार । पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,
आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री
निशा

3) 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने की अपील करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार–पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

12, मुखर्जी नगर,
नई दिल्ली।
दिनांक- 24 मई 2020
सेवा में,
सम्पादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली।
विषय– 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने हेतु।
महोदय,
मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार–पत्र के माध्यम से सभी लोगों का ध्यान 'स्वच्छ भारत अभियान' की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। गाँधी जी की 140 वीं जयन्ती के अवसर पर प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान के आरम्भ करने की घोषणा की थी। इस स्वच्छता अभियान में हम सभी भारतीयों का कर्त्तव्य है कि हम इस अभियान को सफल बनाने में अपना सक्रिय योगदान दें। 'स्वच्छ भारत अभियान' वैयक्तिक एवं सामाजिक दोनों स्तर पर अत्यधिक लाभप्रद होगा।
अतः मेरी सभा से अपील है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए स्वयं को, अपने घर को, अपने पड़ोस को, अपने मोहल्ले को, अपने जिले को, अपने राज्य को और अपने देश को स्वच्छ रखने में सहयोग दें।
धन्यवाद।
भवदीया
ऋतिका

प्र–3 निम्नलिखित विषयों पर संवाद लेखन लिखिए।

1)रोगी और वैद्य का संवाद|

रोगी- (औषधालय में प्रवेश करते हुए) वैद्यजी, नमस्कार!
वैद्य- नमस्कार! आइए, पधारिए! कहिए, क्या हाल है ?
रोगी- पहले से बहुत अच्छा हूँ। बुखार उतर गया है, केवल खाँसी रह गयी है।
वैद्य- घबराइए नहीं। खाँसी भी दूर हो जायेगी। आज दूसरी दवा देता हूँ। आप जल्द अच्छे हो जायेंगे।
रोगी- आप ठीक कहते हैं। शरीर दुबला हो गया है। चला भी नहीं जाता और बिछावन (बिस्तर) पर पड़े-पड़े तंग आ गया हूँ।
वैद्य- चिंता की कोई बात नहीं। सुख-दुःख तो लगे ही रहते हैं। कुछ दिन और आराम कीजिए। सब ठीक हो जायेगा।
रोगी- कृपया खाने को बतायें। अब तो थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगती है।
वैद्य- फल खूब खाइए। जरा खट्टे फलों से परहेज रखिए, इनसे खाँसी बढ़ जाती है। दूध, खिचड़ी और मूँग की दाल आप खा सकते हैं।
रोगी- बहुत अच्छा! आजकल गर्मी का मौसम है; प्यास बहुत लगती है। क्या शरबत पी सकता हूँ?
वैद्य- शरबत के स्थान पर दूध अच्छा रहेगा। पानी भी आपको अधिक पीना चाहिए।
रोगी- अच्छा, धन्यवाद! कल फिर आऊँगा।
वैद्य- अच्छा, नमस्कार।

2) पिता और पुत्र में वार्तालाप ।

पिता- बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षाफल ?
पुत्र- बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।
पिता- क्यों ? बताओ तो कितने अंक आए हैं ?
पुत्र- हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर.....
पिता- अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं ? कोई प्रश्न छूट गया था ?
पुत्र- पूरा तो नहीं छूटा ..... सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।
पिता- तभी तो..... । अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।
पुत्र- गणित का पर्चा अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।
पिता- यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।
पुत्र- पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।
पिता- एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।
पुत्र- एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।
पिता- अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?
पुत्र- बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।
पिता- सब अभ्यास की बात है बेटे ! सुना नहीं 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।
पुत्र- जी पिताजी, मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।
पिता- मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

3) परीक्षा के एक दिन पूर्व दो मित्रों की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

अक्षर- नमस्ते विमल, कुछ परेशान से दिखते हो?

विमल- नमस्ते अक्षर, कल हमारी गणित की परीक्षा है।

अक्षर- मैंने तो पूरा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है, और तुमने?

विमल- पाठ्यक्रम तो मैंने भी दोहरा लिया है, पर कई सवाल ऐसे हैं, जो मुझे नहीं आ रहे हैं।

अक्षर- ऐसा क्यों?

विमल- जब वे सवाल समझाए गए थे, तब बीमारी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सका था।

अक्षर- कोई बात नहीं चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ। शायद तुम्हारी समस्या हल हो जाए।

विमल- पर इससे तो तुम्हारा समय बेकार जाएगा।

अक्षर- कैसी बातें करते हो यार, अरे, तुम्हें पढ़ाते हुए मेरा दोहराने का काम स्वतः हो जाएगा। फिर, इतने दिनों की मित्रता कब काम आएगी।

विमल- पर, मैं उस अध्याय के सूत्र रट नहीं पा रहा हूँ।

अक्षर- सूत्र रटने की चीज़ नहीं, समझने की बात है। एक बार यह तो समझो कि सूत्र बना कैसे। फिर सवाल कितना भी घुमा-फिराकर आए तुम ज़रूर हल कर लोगे।

विमल- तुमने तो मेरी समस्या ही सुलझा दी। चलो अब कुछ समझा भी दो।

प्र-४ निम्नलिखित विषयों पर कहानी लेखन लिखिए।

1) बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताए

किसी नगर में देवशर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहा करता था उसके पर के एक कोने में बिल बनाकर एक नेवली भी रहती थी। जिस दिन देवशर्मा की पली ने अपने पुत्र को जन्म दिया, उसी दिन मेवली को भी एक बच्चा पैदा हुआ। किन्तु बच्चे को जन्म देने के बाद नेवली आपिक देर तक जीवित न रह सकी। उसका देहांत हो गया। पाहाणी को उस नवजात शिशु पर बहुत दया आई। उसने अपने पुत्र की तरह उस दिवाली के पुत्र का भी लालन- पालन आरम् कर दिया।धीरे-धीरे नेवला बड़ा हो गया। अब वह प्रायः ब्राह्मणी के पुत्र के साथ ही रहने लगा था। दोनों में खूब मित्रता हो गई थी। लेकिन अपने पुत्र और नेवले में इतना प्यार होने पर भी ब्राह्मणी हमेशा उसके प्रति शंकित ही रहती थी।

एक दिन की बात है कि ब्राह्मणी अपने पुत्र को सुलाकर हाथ में घड़ा लेकर अपने पति से बोली-'मैं सरोवर पर जल लेने जा रही हूं, जब तक मैं न लौटूं तब तक आप यहीं रुकना और बच्चे की देखभाल करते रहना।ब्राह्मणी जब चली गई तो उसी समय किसी यजमान ने आकर ब्राह्मण को खाने का निमंत्रण दिया। उस नेवले पर ही अपने पुत्र की रक्षा का भार सौंपकर ब्राह्मण अपने यजमान के साथ चला गया।संयोग की बात है कि उसी समय न जाने कहां से एक काला नाग वहां आ पहुंचा और वह बच्चे के पलंग की ओर बढ़ने लगा। नेवले ने उसे देख लिया।

उसे डर था कि यह नाग उसके मित्र को न डस ले, इसलिए वह उस काले नाग पर टूट पड़ा। नाग बहुत फुर्तीला था, उसने कई जगह नेवले के शरीर को काटकर उसमें जख्म बना दिए किन्तु अंत में नेवले ने उसे मारकर उसके शरीर को खंड-खंड कर दिया। नाग को मारने के बाद नेवला उसी दिशा में चल पड़ा, जिधर ब्राह्मणी जल भरने के लिए गई हुई थी। उसने सोचा वह उसकी वीरता की प्रशंसा करेगी किन्तु हुआ उसके विपरीत। उसकी खून से सनी देह को देखकर ब्राह्मणी का मन आशंकाओं से भर उठा कि कहीं उसने मेरे पुत्र को तो नहीं काट लिया।

यह विचार आते ही उसने क्रोध से सिर पर उठाए घड़े को नेवले पर पटक दिया। छोटा-सा नेवला जल से भरे घड़े की चोट बरदाश्त न कर सका और उसका वहीं प्राणांत हो गया। ब्रह्माणी भागती हुई अपने घर पहुंची। वहां पहुंचकर उसने देखा कि उसका पुत्र तो बड़ी शांति का शरीर खंड-खंड हुआ पड़ा है। पश्चात्ताप से उसकी छाती फटने लगी। इसी बीच ब्राह्मण भी लौट आया।वहां आकर उसने अपनी पली को विलाप करते देखा तो उसका मन भी सशंकित हो गया लेकिन जब उसने पुत्र को शांति से सोए हुए दखा तो उसका मन शांत हो गया।

2) ट्रैफिक लाइट की कहानी

एक बार, एक सीफी नामक ट्रैफिक लाइट थी। सीफी अपनी हरी, लाल और पीली पलकें झपकाती हुई उदास खड़ी थी। उसने आह भरते हुए कहा-'मुझे कोई नहीं चाहता, न ही मुझे कोई पसंद करता है।" लेकिन वह लोगों को अपनी तरफ देखते हुए देखकर वह खुश होती थी, जब लोग उसकी लाईट के हरे होने का इंतज़ार करते थे। वह खुश होती थी, जब बच्चे उसकी ओर ध्यान देते थे।

वे कारों की खिड़कियों से झांककर उसकी ओर तब तक देखते थे, जब तक कि वह हरी नहीं हो जाती थी। एक दिन की बात है, ट्रैफिक लाइट खराब हो गई। वह रंग नहीं बदल पा रही थी। सभी गाड़ियाँ फँस गई थीं, और हिल नहीं पा रही थीं। तभी दो आदमी उसे ठीक करने के लिए आए। उनमें से एक ने कहा- "इस ट्रेफिक जाम को तो देखो। हमें इसे जल्दी से ठीक करना पड़ेगा।" यह सुनकर ट्रेफिक लाईट को अपना महत्व पता चला।

3) घंटाधारी ऊंट

किसी गांव में उज्ज्वलक नाम का एक बढ़ई रहता था। वह बहुत निर्धन था। निर्धनता से तंग आकर एक दिन वह गांव छोड़कर दूसरे स्थान के लिए निकल पड़ा। रास्ते में घना जंगल पड़ता था। वहां उसने देखा कि एक ऊंटनी प्रसव-पीड़ा से तड़प रही है। ऊंटनी ने जब बच्चा दिया तो वह ऊंटनी और उसके बच्चे को लेकर अपने घर लौट आया। अब समस्या पैदा हो गई कि वह ऊंटनी को चारा कहां से खिलाए ? उसने ऊंटनी को खूटे से बांधा और उसके लिए चारे का प्रबंध करने के लिए जंगल की ओर निकल पड़ा। जंगल में पहुंचकर उसने वृक्षों की पत्ती-भरी शाखाएं कार्टी, और उन्हें ले जाकर ऊंटनी के सामने रख दिया।

ऊंटनी ने हरी-भरी कोपलें खाई। कुछ दिन तक ऐसा ही आहार मिलता रहा तो ऊंटनी बिल्कुल स्वस्थ हो गई। उसका बच्चा भी धीरे-धीरे बढ़ा होने लगा। तब बढ़ई ने उसके गले में एक घंटा बांध दिया, जिससे वह कहीं खो न जाए। दूर से ही घंटे की आवाज सुनकर बढ़ई उसे घर लिवा लाता था। ऊंटनी के दूध से बढ़ई के बाल-बच्चे भी पलते थे। ऊंट का बच्चा, जो अब जवान हो चुका था, भार ढोने के काम में आने लगा था। बढ़ई निश्चिंत रहने लगा। उसने सोचा कि अब उसे कुछ करने की आवश्यकता नहीं। निर्वाह ठीक ढंग से चल ही रहा है, अतः अब उसे कोई व्यापार कर लेना चाहिए।

इस विषय में उसने अपनी पली से सलाह की तो उसने परामर्श दिया कि ऊंटों का व्यापार करना ही उचित रहेगा। भाग्य ने साथ दिया और कुछ ही दिनों में उसके पास ऊंट-ऊंटनियों का एक समूह हो गया।अब उसने उनकी देखभाल के लिए एक नौकर भी रख लिया । इस प्रकार उसका ऊंटों का व्यापार खूब चलने लगा। सारे ऊंट दिन-भर तो तालाब या नदी किनारे चरा करते और शाम को घर लौट आते थे। उन सबके पीछे वहीं ऊंट होता था, जिसके गले में बढ़ई ने घंटा बांध दिया था। अब वह ऊंट स्वयं पर कुछ ज्यादा ही गर्व महसूस करने लगा था। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि शेष ऊंट तो शाम होते ही घर पहुंच गए, किंतु वह घंटाघारी ऊंट वापस न लौटा। वह जंगल में कहीं भटक गया। उसके घंटे की आवाज सुनकर एक सिंह उस पर झपट पड़ा और अपने तीक्ष्ण नाखूनों से उसका पेट फाड़ डाला।

यह कथा सुनाकर वानर बोला-'तभी तो मैं कहता हूं कि जो व्यक्ति अपने हितैषियों की बात नहीं मानता, उसकी ऐसी ही दशा होती है।'

* चित्र- वर्णन कीजिए।

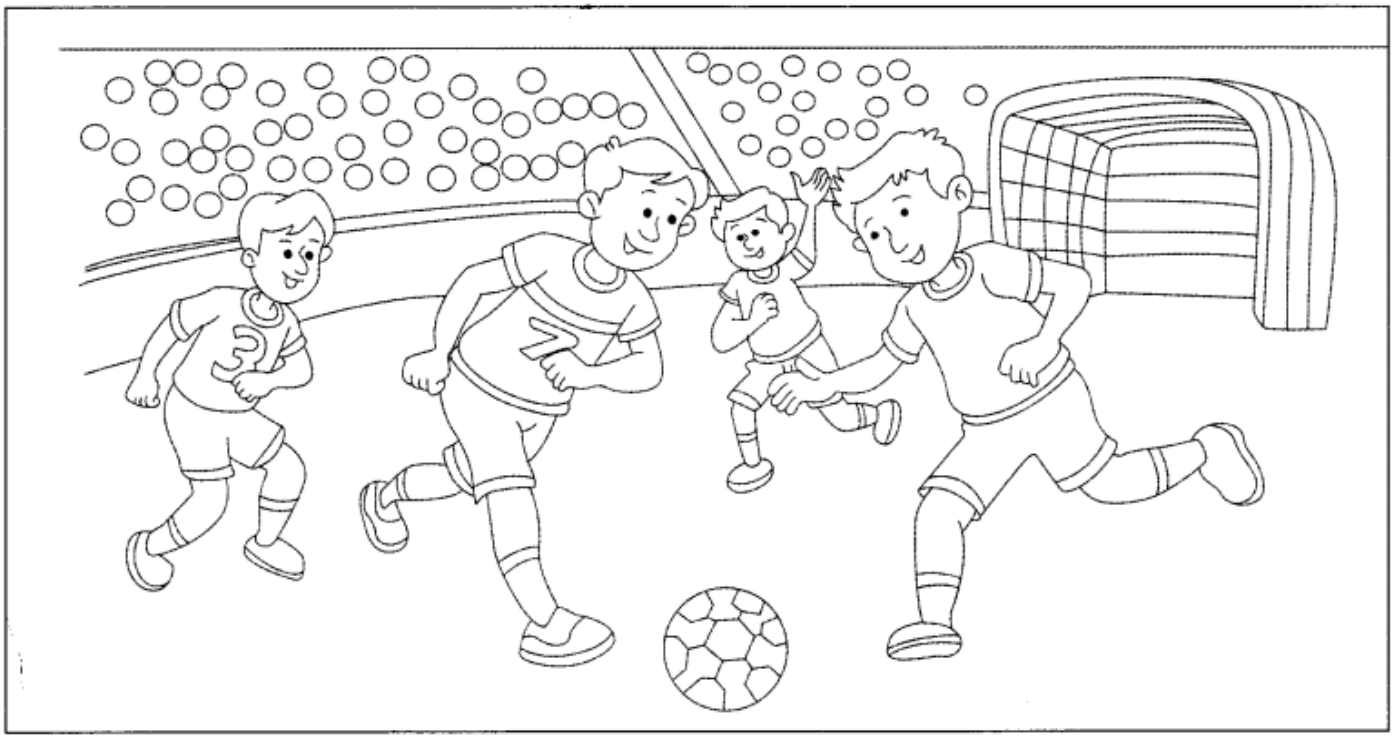

यह नई दिल्ली में खेले जा रहे अंडर-17 फुटबॉल विश्व कप के फुटबॉल मैच का एक दृश्य है। इसमें खिलाड़ियों का जोश देखते ही बन रहा है। भारतीय खिलाड़ी गेंद को लेकर आगे बढ़ रहे हैं और गोल करना चाहते हैं। अमेरिकी खिलाडी इस गोल को बचाने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं। मैच बहुत शानदार चल रहा है| लोग बड़े चाव से इस खेल को देख रहे है |

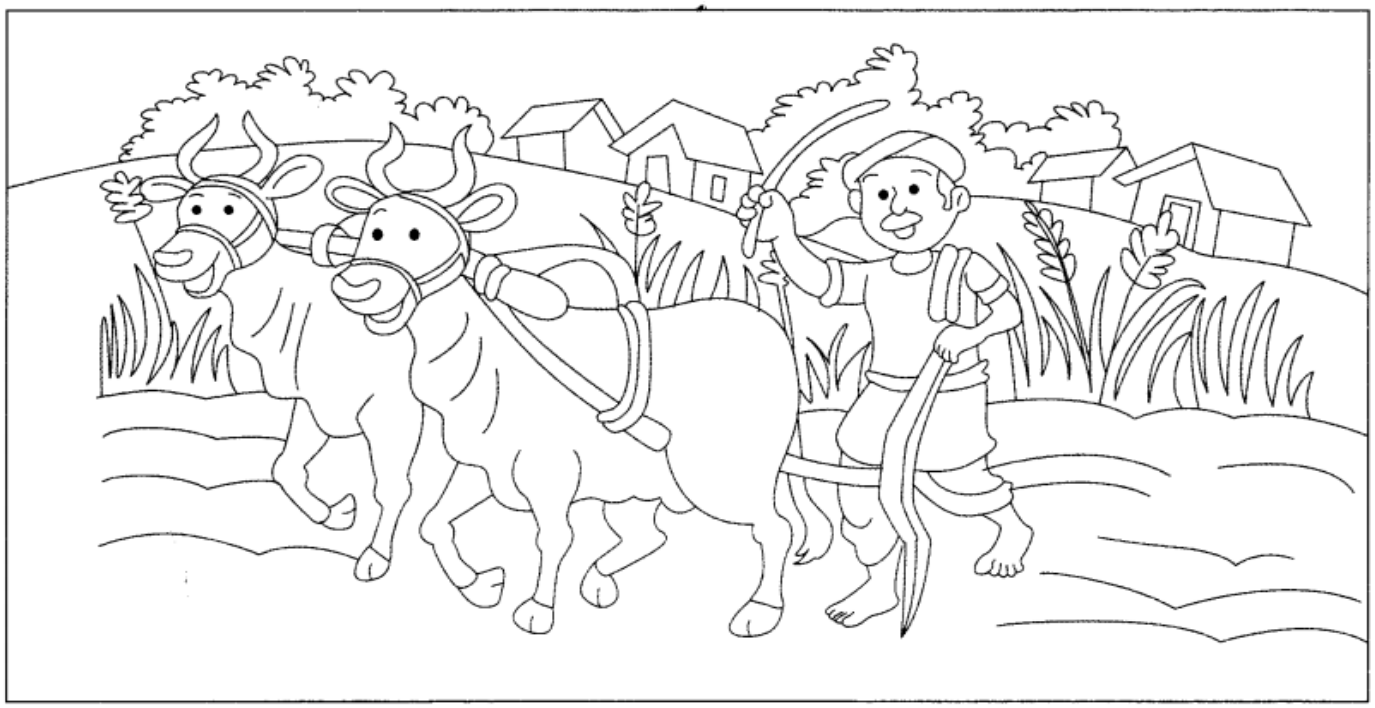

यह भारतीय किसान का चित्र है। किसान परिश्रम एवं सरलता की मूर्ति होता है। वह अपने कठोर परिश्रम से बंजर धरती को भी हरा-भरा बना देता है। किसान अनाज उगाकर दूसरों का पेट भरता है। उसका परिश्रमी जीवन देखकर ही हमारे पूर्व प्रधानमंत्री ने 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया था। किसान कड़ी महेनत करके हमें अनाज देता है| इस चित्र में किसान खेती कर रहा है और वह खेती करते हुए बड़ा खुश नजर आ रहा है|

(व्याकरण–विभाग)

उपसर्ग की परिभाषा

उपसर्ग उस शब्दांश या अव्यय को कहते है, जो किसी शब्द के पहले आकर उसका विशेष अर्थ प्रकट करता है।

दूसरे शब्दों में– ''उपसर्ग वह शब्दांश या अव्यय है, जो किसी शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में मूल शब्द के अर्थ में विशेषता ला दे या उसका अर्थ ही बदल दे।'' वे उपसर्ग कहलाते है।

अन	–	अनमोल, अलग, अनजान, अनकहा, अनदेखा इत्यादि।
अध्	–	अधजला, अधखिला, अधपका, अधकचरा, अधकच्चा, अधमरा इत्यादि।
उन	–	उनतीस, उनचास, उनसठ, इत्यादि।
भर	–	भरपेट, भरपूर, भरदिन इत्यादि।
दु	–	दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुकाल इत्यादि।
नि	–	निगोड़ा, निडर, निकम्मा इत्यादि।

प्रत्यय की परिभाषा

जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।

दूसरे अर्थ में- शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है- प्रति+अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।

प्रत्यय	**धातु**	**कृदंत-रूप**
आऊ	टिक	टिकाऊ
आक	तैर	तैराक
आका	लड़	लड़का
आड़ी	खेल	खिलाड़ी

प्रत्यय	धातु	कृदंत-रूप
आलू	झगड़	झगड़ालू
इया	बढ़	बढ़िया
इयल	अड़	अड़ियल
इयल	मर	मरियल
ऐत	लड़	लड़ैत
ऐया	बच	बचैया
ओड़	हँस	हँसोड़
ओड़ा	भाग	भगोड़ा

(कारक)

कारक की परिभाषा

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) सम्बन्ध सूचित हो, उसे (उस रूप को) 'कारक' कहते हैं। कारक के भेद-

(1)कर्ता कारक
(2)कर्म कारक
(3)करण कारक
(4)सम्प्रदान कारक
(5)अपादान कारक
(6)सम्बन्ध कारक
(7)अधिकरण कारक
(8)संबोधन कारक

कर्ता कारक :- जो वाक्य में कार्य करता है उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले उसे कर्ता कहते हैं।

राम ने पत्र लिखा।
हम कहाँ जा रहे हैं।
रमेश ने आम खाया।
अशोक ने पत्र पढ़ा।
नीलिमा चॉकलेट खा रही है।

कर्म कारक :- जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं।

- ममता सितार बजा रही है।
- राम ने रावण को मारा।
- गोपाल ने राधा को बुलाया।
- रवि ने पंकज को पुस्तक दी।

- अबदुल ने भिखारी को रोटी दी।

करण कारक :- जिस साधन से क्रिया होती है उसे करण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिन्ह से और के द्वारा होता है।

- बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
- बच्चा बोतल से दूध पीता है।
- राम ने रावण को बाण से मारा।
- अध्यापक ने चॉक से लिखा।
- माँ ने साबुन से कपड़े धोए।

सम्प्रदान कारक :- जिसके लिए कोई क्रिया काम की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते है।

- वे मेरे लिए उपहार लाये हैं।
- माँ बेटे के लिए सेब लायी।
- मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ।
- माँ ने बेटे के लिए कपड़े खरीदे।
- दूधवाले को पैसे दो।

अपादान कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का बोध हो वहाँ पर अपादान कारक होता है।

हाथ से छड़ी गिर गई।
चूहा बिल से बाहर निकला।
पेड़ से आम गिरा।
रामू घर से निकला।
अलमारी से सामान गिरा।

संबंध कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं।

राम की किताब, श्याम का घर।
चाँदी की थाली, सोने का गहना।
यह घर सुनील का है।

अधिकरण कारक :- अधिकरण का अर्थ होता है – आधार या आश्रय। संज्ञा के जिस रूप की वजह से क्रिया के आधार का बोध हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

पुस्तक मेज पर है।
पानी में मछली रहती है।
फ्रिज में सेब रखा है।
गिलहरी पेड़ पर चढ़ गई।
जल में मगर रहता है।

सम्बोधन कारक :- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से बुलाने या पुकारने का बोध हो उसे सम्बोधन कारक कहते हैं।

हे ईश्वर ! रक्षा करो।
अरे ! बच्चो शोर मत करो।
हे राम ! यह क्या हो गया।

* **मुहावरा–**

संक्षेप में ऐसा वाक्यांश, जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे, मुहावरा कहलाता है।

1) **अँगारे बरसना**— अत्यधिक गर्मी पड़ना।
जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।

2) **अंगारों पर पैर रखना-** कठिन कार्य करना।
युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।

3) **अँगारे सिर पर धरना**— विपत्ति मोल लेना।
सोच-समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।

4) **अँगूठा चूसना-** बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।
कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?

5) **अँगूठा दिखाना**- इनकार करना।
बेटे के प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर किशोरी ने उन्हें याद दिलाई तो उन्होंने उसे अँगूठा दिखा दिया।

6) **अँगूठी का नगीना-** अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति अथवा वस्तु।
अकबर के नवरत्नों में बीरबल तो जैसे अंगूठी का नगीना थे।

7) **अंग-अंग फूले न समाना-** अत्यधिक प्रसन्न होना।
राम के अभिषेक की बात सुनकर कौशल्या का अंग-अंग फूले नहीं समाया।

8) **अंगद का पैर होना-** अति दुष्कर/असम्भव कार्य होना।
यह पहाड़ी कोई अंगद का पैर तो है नहीं, जिसे हटाकर रेल की पटरी न बिछाई जा सके।

9) **अन्धी सरकार**— विवेकहीन शासन।
कालाबाजारी खूब फल-फूल रही है, किन्तु अन्धी सरकार उन्हीं का पोषण करने में लगी है।

10) **अन्धे की लाठी लकड़ी.होना**- एकमात्र सहारा होना।
निराशा में प्रतीक्षा अन्धे की लाठी है।

11) **अन्धे के आगे रोना-** निष्ठुर के आगे अपना दुःखड़ा रोना।।
जिस व्यक्ति ने पैसों के लिए अपनी पत्नी को जलाकर मार दिया, उससे सहायता माँगना तो अन्धे के आगे रोना जैसा व्यर्थ है।

12) **अम्बर के तारे गिनना-** नींद न आना।
तुम्हारे वियोग में मैं रातभर अम्बर के तारे गिनता रहा।

13) **ईद का चाँद होना-** बहुत दिनों बाद दिखाई देना
तुम तो कभी दिखाई ही नहीं देते, तुम्हे देखने को तरस गया, ऐसा लगता है कि तुम ईद के चाँद हो गए हो।

14) **उबल पड़ना** - एकाएक क्रोधित होना
दादी माँ से सब बच्चे डरते हैं, पता नहीं वे कब उबल पड़ें।

15) **एक से इक्कीस होना** - उन्नति करना
सेठ जी की दुकान चल पड़ी हैं, अब तो शीघ्र ही एक से इक्कीस हो जाएँगे।

16) **कान देना-** ध्यान देना
पिता की बातों पर कण दिया करो।

17) **कलेजा मुँह का आना** - भयभीत होना

गुंडे को देख कर उसका कलेजा मुँह को आ गया

18) **कलई खुलना** - भेद प्रकट होना
जब सबके सामने रामू की कलई खुल गई तो वह बहुत लज्जित हुआ।

19) **खून-पसीना एक करना** - अधिक परिश्रम करना
खून पसीना एक करके विद्यार्थी अपने जीवन में सफल होते है।

20)**खार खाना** - ईर्ष्या करना
वह तो मुझसे खार खाए बैठा हैं, वह मेरा काम नहीं करेगा।

21) **गले का हार होना-** बहुत प्यारा
लक्ष्मण राम के गले का हर थे।

22)**गले न उतरना -** पसन्द नहीं आना
मुझे उसका काम गले हीं उतरता, वह हर काम उल्टा करता हैं।

23) **घुटने टेकना** - हार या पराजय स्वीकार करना
संजू इतनी जल्दी घुटने टेकने वाला नहीं है, वह अंतिम साँस तक प्रयास करेगा।

24) **छाप पड़ना** प्रभाव पड़ना
प्रोफेसर शर्मा का व्यक्तित्व ही ऐसा है। उनकी छाप सब पर जरूर पड़ती है।

25)**जमीन में समा जाना** - बहुत लज्जित होना
जब उधार के पैसे ने देने पर सबके सामने रामू का अपमान हुआ तो वह जमीन में ही समा गया।

26) **तारे गिनना** - चिंता के कारण रात में नींद न आना
अपने पुत्र की चिन्ता में पिता रात भर तारे गिनते रहे।

* अनेक शब्दों के एक शब्द

1) इतिहास से संबंध रखने वाला– ऐतिहासिक
2) एक सप्ताह में होने वाला– साप्ताहिक
3)ऋषियों के रहने का स्थान– आश्रम
4) कठिनता से प्राप्त होने वाला – दुर्लभ
5)किसी से भी न डरना वाला– निडर
6) किसी प्राणी को न मारना – अहिंसा
7)जिस स्त्री का पति जीवित हो– सधवा
8) जिसकी कोई सीमा न हो – असीम
9)जहाँ लोगों का मिलन हो– सम्मेलन
10) जिसके आने की तिथि न हो – अतिथि
11)जो आँखों के सामने न हो – परोक्ष
12) वन में रहने वाला मनुष्य– वनवासी
13)तेज़ गति से चलने वाला – द्रुतगामी
14) जिसका कोई कारण न हो – अकारण
15)जो देखने योग्य हो- दर्शनी
16) जो पढ़ने योग्य हो- पठनीय
17)जिसमें रस न हो- नीरस
18) शहर में रहने वाला- शहरी
19)जो गाना गाती हो -गायिका
20) विज्ञान से संबंध रखने वाला- वैज्ञानिक
21)इतिहास से संबंध रखने वाला- ऐतिहासिक
22) समाज-सेवा करने वाला- समाज-सेवक
23)जो पुरुष कविता रचता है- कवि
24) जो स्त्री कविता रचती है- कवयित्री
25)जो गाना गाता हो- गायक
26) शरण में आया हुआ- शरणागत
27)अत्याचार करने वाला- अत्याचारी
28) जंगल में रहने वाला- जंगली
29)जल में रहने वाला- जलचर
30) भाषण देने वाला- वक्ता
31)भाषण सुनने वाला- श्रोता
32) जो कभी न मरे- अमर
33)जो कभी बूढ़ा न हो- अजर
34) जहाँ जाना कठिन हो- दुर्गम
35)जिसे पाना कठिन हो- दुर्लभ

* समानार्थक / पर्यायवाची शब्द

- सामान अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द समानार्थक या पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं ।

क्र.सं	शब्द	पर्यायवाची शब्द
1	आँख	चक्षु , नयन, नेत्र
2	आग	अग्नि , अनल, पावक
3	आभूषण	विभूषण, गहना, अलंकार
4	आम	आम्र, रसाल, कामशर
5	अँधेरा	अंधकार, तम , तिमिर
6	आनंद	आमोद, हर्ष, ख़ुशी
7	आदमी	नर, मनुष्य, मानव
8	आकाश	नभ, गगन, अंबर
9	अमृत	सुधा, सोम, अमिय
10	काया	तन, शरीर, देह
11	सोना	स्वर्ण, कंचन, हेम
12	किनारा	कूल, तट, तीर
13	कपड़ा	चीर, वस्त्र, पट
14	मित्र	दोस्त, सखा, सहचर
15	युद्ध	रण, संग्राम, समर
16	हवा	पवन, वायु, समीर
17	हाथी	गज, हस्ती, दंती
18	सूरज	सूर्य, भानू, दिनकर
19	समूह	झुण्ड, संघ, समुदाय
20	तलवार	असि, खड्ग, कृपाण
21	चंद्रमा	शशि, शशांक, राकेश
22	पक्षी	खग, विहग, नभचर
23	बिजली	विद्युत, दामिनी, चंचला
24	पृथ्वी	धरती, भू, भूमि
25	शेर	सिहं, केसरी, वनराज

*** निम्नलिखित क्रियाओं के भेद लिखिए।**

1) पौधा बढ़ रहा है। - अकर्मक क्रिया
2) चूहे ने अनाज खाया।- सकर्मक क्रिया
3) चाँद चमकने लगा।- अकर्मक क्रिया
4) रवि ने चित्र बनाया।- सकर्मक क्रिया
5) मोहन कहानी लिखता है।- सकर्मक क्रिया

6) फूल सुंदर है।- अकर्मक क्रिया
7) बच्चा खेलता है।- अकर्मक क्रिया
8) राधा पकौड़े बनाती है।- सकर्मक क्रिया
9) दिनेश गीता पढ़ता है।- सकर्मक क्रिया
10) रमा सोती है।- अकर्मक क्रिया
11) नदी बहती है।- अकर्मक क्रिया
12) क्रिया का मूल रूप है
क) धातु ख) अव्यय ग) रूप घ) इनमें से कोई नहीं
13) कर्म के आधार पर क्रिया के भेद है
क) चार ख) तीन ग) दो घ) छः
14) जिस वाक्य में एक कर्म हो उसे कहा जाता है
क) अकर्मक ख) सकर्मक ग) द्विकर्मक घ) एककर्मक
15) चिड़ियाँ उड़ चली।- अकर्मक क्रिया
16) उमेश तबला बजा रहा है।- सकर्मक क्रिया
17) बच्चा सो रहा था।- अकर्मक क्रिया
18) बबलू चाँद देख रहा है।- सकर्मक क्रिया

* वाक्य के प्रकार (भेद)

1) विधानवाचक वाक्य (**Affirmative sentence)**

जिस वाक्य से क्रिया करने या होने का बोध हो , उसे विधानवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- रमा खेल रही है।

2) निषेधवाचक वाक्य (**Negative sentence)**

जिस वाक्य में क्रिया न करने या न होने का बोध हो , उसे निषेधवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- बाहर जाना मना है।

3) प्रश्नवाचक वाक्य (**Interrogative sentence)**

जिस वाक्य में प्रश्न का बोध हो , उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- तुम क्या कर रहे हो ?

4) संदेहवाचक वाक्य (**Skeptical sentence)**

जिस वाक्य में संदेह या संभावना का बोध हो , उसे संदेहवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- शायद आज बारिश होगी।

5) संकेतवाचक वाक्य (**Indicative sentence)**

जिस वाक्य में एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर होने का संकेत हो , उसे संकेतवाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- यदि बारिश होती तो पानी की कमी न होती।

6) इच्छावाचक वाक्य (**Optative sentence)**

जिस वाक्य में इच्छा , शुभकामना , आशीर्वाद , आशा आदि के भाव प्रकट हों , उसे इच्छावाचक वाक्य कहते

है।

जैसे :- मुझे आज बाहर जाने का मन हो रहा है।

आप अच्छे अंको से पास हो।

सदा कल्याण हो।

अच्छे के लिए आशा !

7) आज्ञावाचक वाक्य **(Imperative sentence)**

जिस वाक्य में आज्ञा , उपदेश , आदेश , अनुमति या प्रार्थना आदि के भाव प्रकट हो , उसे आज्ञावाचक वाक्य कहते है।

जैसे :- तुम बाहर जाओ।

निरंतर कोशिश करने वाले कभी हारते नहीं।

तुम खेलने के लिए बाहर जा सकते हो।

हे प्रभु ! मेरा विश्वास कमज़ोर न हो।

8) विस्मयादिवाचक वाक्य **(Exclamatory sentence)**

जिस वाक्य में विस्मय , हर्ष , क्रोध , घृणा आदि के भाव प्रकट हों , उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते है।

जैसे :- अरे ! तुम कितनी सुंदर लग रही हो।

धन्य – धन्य ! तुम पहले नंबर से पास हो गए।

बस करो ! तुम्हें कुछ समज में नहीं आता ?

छिः ! कितना गंदा पानी है।

नीचे दिए गए वाक्यों के प्रकार लिखिए।

1) आप सब इधर देखिए।

2) यदि ट्रैफिक में न फँसा होता तो जल्दी आ जाता।

3) तुम कौन हो ?

4) धरती गोल है।

5) यहाँ गाड़ी खड़ी करना मना है।

6) शायद मैं कल दिल्ली जाऊँगा।

7) हे प्रभु ! सबका कल्याण हो।

8) अहा ! कितना सुंदर उपवन है।

9) उपवन में पक्षी कलरव कर रहे है।

10) ऐसी सर्दी में बाहर मत जाओ।

11) पत्रोत्तर अवश्य देना।

12) संभवतः इस साल वर्षा हो।

13) वाह ! भारत ने विश्वकप जीत लिया।

14) ईश्वर आपको लंबी उम्र दे।

15) उसने झूठी गवाही न दी होती तो गोपी जेल से बाहर होता।

16) चिड़िया चहचहा रही है।

17) अनुभा चित्र नहीं बनाती है।

18) मेरे लिए एक कप कोफ़ी लाना।

19) क्या वह आगरा जाएगी ?

20) आप दीर्धायु हो।

* क्रिया-विशेषण

परिभाषाः

क्रिया की विशेषता को बताने वाले शब्द क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

1. वह प्रतिदिन पढ़ता है।
2. मोहित तेज चलता है।
3. कोयल मधुर गाती है।

क्रिया-विशेषण के भेद

क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं:

- स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
- कालवाचक क्रिया-विशेषण
- परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
- रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

*** निम्नलिखित वाक्यों में से क्रिया विशेषण शब्द चुनकर लिखिए।**

1) वह संभवतः चला गया है।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

2) जिधर देखो पानी-ही-पानी है।- स्थानवाचक क्रियाविशेषण

3) मैं प्रातःकाल उठ जाता हूँ।- कालवाचक क्रियाविशेषण

4) नवीन अचानक गिर पड़ा।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

5) भाई अवश्य आएगा।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

6) काफ़ी सो चुके अब जाग जाओ।- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

7) सभी छात्र बारी-बारी से बोलेंगे।- परिणामवाचक क्रियाविशेषण

8) बच्चा अचानक गिर पड़ा।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

9) मेरा घर इस ओर है।- स्थानवाचक क्रियाविशेषण

10) रजनी कल आएगी।- कालवाचक क्रियाविशेषण

11) वह खूब नाच रहा है।- परिणामवाचक क्रियाविशेषण

12) वह सवेरे टहलने जाता है।- कालवाचक क्रियाविशेषण

13) फूल मत तोड़ो।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

14) अधिक खेलना ठीक नहीं- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

15) अब थोड़ा टहल लो।- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

16) वह मेरे घर बहुधा आता है।

क) स्थानवाचक　　ख) रीतिवाचक
ग) कालवाचक　　घ) परिमाणवाचक

17) जितना पढ़ोगे अच्छा रहेगा।
क) स्थानवाचक　　ख) रीतिवाचक
ग) कालवाचक　　**घ) परिमाणवाचक**

18) काफ़ी खेल चुके, अब आराम करो।
क) स्थानवाचक　　ख) रीतिवाचक
ग) कालवाचक　　**घ) परिमाणवाचक**

19) वह बाहर खड़ा है।
क) स्थानवाचक　　ख) रीतिवाचक
ग) कालवाचक　　घ) परिमाणवाचक

20) आप कहाँ चले गए?
क) स्थानवाचक　　**ख) रीतिवाचक**
ग) कालवाचक　　घ) परिमाणवाचक

21) ट्रेन अभी आने वाली है।
क) स्थानवाचक　　ख) रीतिवाचक
ग) कालवाचक　　घ) परिमाणवाचक

22) वह मेरे बारे में भली-भाँति जानता है।
क) स्थानवाचक　　**ख) रीतिवाचक**
ग) कालवाचक　　घ) परिमाणवाचक

(साहित्य-विभाग)

* अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1) आजकल लड़के किसे घेरे रहते थे और क्यों?
उत्तर-आजकल नागराजन को घेरे रहते थे क्योंकि उसके पास बढिया अलबम था।

2) अब किसके अलबम की पूछ नहीं रह गई थी?
उत्तर-अब राजप्पा के अलबम की पूछ लड़कों में नहीं रह गई थी।

3) लड़कियों ने नागराजन से अलबम किसे माँगने भेजा और क्यों?
उत्तर-लड़कियों ने नागराजन से अलबम माँगने के लिए पार्वती को अपना अगुआ बनाकर भेजा क्योंकि वही सबसे तेज़-तर्रार थी।

4) राजप्पा ने सरपंच के लड़के से क्या कहा?
उत्तर- राजप्पा ने सरपंच के लड़के से कहा-तुम्हारे घर में जो प्यारी बच्ची है उसे तीस रुपए में दोगे।

5) राजप्पा ने अलबम क्यों छिपा दिया?
उत्तर- राजप्पा ने नागराजन की अलबम चुराई थी, इसलिए वह नहीं चाहता था कि किसी को इसके बारे में कुछ पता चले।

6) डलहौज़ी प्रसन्न क्यों था?
उत्तर- क्योंकि नि:संतान राजा गंगाधर राव की मृत्यु होने पर झाँसी का अधिकार स्वतः ही अंग्रेज़ी सरकार को मिल जाना

था इसलिए डलहौज़ी प्रसन्न था।

7) महल में खुशी का कारण क्या था?

उत्तर–विवाह के बाद रानी लक्ष्मीबाई का महल में आना खुशी का प्रमुख कारण था।

8) ब्रिटिश सरकार ने झाँसी के दुर्ग पर झंडा क्यों फहराया?

उत्तर– क्योंकि वहाँ के राजा निःसंतान मृत्यु को प्राप्त हुए।

9) रानियों और बेगमों की क्या दशा थी?

उत्तर- वे परेशान थीं, क्योंकि उनके कपड़े और गहने खुलेआम बाजारों में बेचे जा रहे थे।

10) लेखिका के कानों में किसके मधुर स्वर गूंजने लगते थे?

उत्तर– लेखिका के कानों में चिड़ियों के मधुर स्वर गूंजने लगते थे।

11) लेखिका को प्रकृति के जादू का अहसास कब होता है?

उत्तर–फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने से लेखिका को प्रकृति के जादू का अहसास होता है।

12) इस दुनिया के लोग कैसे हैं?

उत्तर– इस दुनिया के अधिकांश लोग संवेदनहीन हैं। वे अपनी क्षमताओं की कद्र करना नहीं जानते।

13) हेलेन केलर अपने मित्रों की परीक्षा क्यों लेती है?

उत्तर- हेलेन केलर अपने मित्रों की परीक्षा यह परखने के लिए लेती है कि वे क्या देखते हैं।

14) लेखिका को झरने का पानी कब आनंदित करता है?

उत्तर- लेखिका जब झरने के पानी में अँगुलियाँ डालकर उसके बहाव को महसूस करती है, तब वह आनंदित हो उठती है।

15) हम इतिहास में क्या पढ़ते हैं?

उत्तर– हम इतिहास में विभिन्न देशों के बीते हुए समय की जानकारी पढ़ते हैं, जैसे–हिंदुस्तान और इंग्लैंड का इतिहास।

16) एक रोड़ा दरिया में लुढ़कता–लुढ़कता किस रूप में बदल जाता है?

उत्तर– रोड़ा दरिया में लुढ़कते–लुढ़कते छोटा होता जाता है और अंत में रेत का कण बन जाता है।

17) पत्थर अपनी कहानी हमें कैसे बताते हैं?

उत्तर– पत्थरों की कहानी उनके ऊपर ही लिखी हुई है। यदि हमें उसे पढ़ने और समझने की दृष्टि हो तो हम यह कहानी जान सकते हैं।

18) लेखक ने संसार को पुस्तक क्यों कहा है?

उत्तर- जैसे पुस्तक पढ़कर बहुत-सी जानकारी प्राप्त की जा सकती है, वैसे ही संसार में रहकर भी हमें बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं। इसलिए लेखक ने संसार को पुस्तक कहा है।

19) एक रोड़ा दरिया में लुढ़कता-लुढ़कता किस रूप में बदल जाता है?

उत्तर- रोड़ा दरिया में लुढ़कते-लुढ़कते छोटा होता जाता है और अंत में रेत का कण बन जाता है।

20) गांधी जी घर के लिए आटा कैसे तैयार करते थे?

उत्तर– गांधी जी ज़रूरत का महीन या मोटा आटा सुबह–शाम चक्की से पीसकर तैयार कर लेते थे।

21) गांधी द्वारा भोजन परोसने के कारण आश्रमवासियों को क्या सहना पड़ता था?

उत्तर– उनको बेस्वाद भोजन खाकर ही रहना पड़ता था।

22) गांधी जी लिखते समय किस बात का ध्यान रखते थे?

उत्तर– गांधी जी रात को लालटेन की रोशनी में पत्र लिखते थे। जब तेल खत्म हो जाता तब वे चंद्रमा की रोशनी में पत्र पूरा करते थे।

23) गांधी द्वारा भोजन परोसने के कारण आश्रमवासियों को क्या सहना पड़ता था?

उत्तर- उनको बेस्वाद भोजन खाकर ही रहना पड़ता था।

24) बोअर-युद्ध के दौरान गांधी जी ने क्या किया?

उत्तर- बोअर-युद्ध के दौरान गांधी जी ने घायलों को स्ट्रेचर पर ढोया था।

25) बूढ़े बाँस की क्या पहचान है?

उत्तर– तीन साल से अधिक आयु का बाँस बूढ़ा माना जाता है। बूढ़ा बाँस सख्त होता है जिसके कारण बहुत जल्दी टूट जाता है।

26) भारत में बाँस कहाँ-कहाँ बहुतायत से पाया जाता है?

उत्तर- बाँस भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों-अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम व त्रिपुरा में बहुतायत से पाया जाता है।

27) बाँस से क्या-क्या चीजें बनाई जाती हैं?

उत्तर- बाँस से चटाइयाँ, टोकरियाँ, बरतन, बैलगाड़ियाँ, फ़र्नीचर, खिलौने, सजावटी सामान, जाल, मकान, पुल आदि चीजें बनाई जाती हैं?

(बाल–रामायण)

1) राम ने लक्ष्मण को क्या आदेश दिया था?

उत्तर- राम ने लक्ष्मण को उनके लौटने तक सीता की रक्षा का आदेश दिया था ।

2) सीता क्या सुनकर विचलित हो गई?

उत्तर - सीता मायावी पुकार सुनकर विचलित हो गई ।

3) लक्ष्मण के जाते ही कौन आ पहुँचा?

उत्तर - लक्ष्मण के जाते ही रावण आ पहुँचा ।

4) रावण किस वेश में आया था?

उत्तर - रावण तपस्वियों के वेश में आया था ।

5) रावण ने सीता के किन गुणों की प्रशंसा की?

उत्तर - रावण ने सीता के स्वरुप, संस्कार और साहस की प्रशंसा की ।

6) रावण सीता को लेकर सीधे कहाँ गया?

उत्तर - रावण सीता को लेकर सीधे अपने अंतःपुर में गया।

7) कबंध ने राम से क्या आग्रह किया?

उत्तर - कबंध ने राम से आग्रह किया कि उसका अंतिम संस्कार राम करें।

8) वानरराज सुग्रीव` कहाँ रहते थे?

उत्तर - वानरराज सुग्रीव पंपा सरोवर के निकट ऋष्यमूक पर्वत पर रहते थे।

9) पंपा सरोवर के पास किसका आश्रम था?

उत्तर - पंपा सरोवर के पास मतंग ऋषि का आश्रम था।

10) शबरी कौन थी और वो कहाँ रहती थी?

उत्तर - शबरी मतंग ऋषि की शिष्या थी और वह मतंग ऋषि के आश्रम में ही रहती थी।

11) सुग्रीव के बड़े भाई का क्या नाम था?

उत्तर - सुग्रीव के बड़े भाई का नाम बाली था।

12) सुग्रीव के प्रमुख साथी कौन थे?

उत्तर - सुग्रीव के प्रमुख साथी हनुमान थे।

13) किसने सुग्रीव को उनका राम को दिया वचन याद दिलाया?
उत्तर- हनुमान ने सुग्रीव को उनका राम को दिया वचन याद दिलाया ।
14) वानरसेना एकत्र करने का आदेश सुग्रीव ने किसे दिया?
उत्तर- वानरसेना एकत्र करने का आदेश सुग्रीव ने सेनापति नल को दिया ।
15) हनुमान की परछाई समुद्र में कैसे दिखती थी?
उत्तर - हनुमान की परछाई समुद्र में नाव की तरह दिखती ।
16 सुरसा कौन थी और वह क्या चाहती थी?
उत्तर - सुरसा विराट शरीर वाली राक्षसी थी और वह हनुमान को खा जाना चाहती थी ।
17)रावण की रानी का क्या नाम था?
उत्तर- रावण की रानी का नाम मंदोदरी था।
18) राक्षसी त्रिजटा ने सपने में क्या देखा?
उत्तर- त्रिजटा ने सपने में देखा कि पूरी लंका समुद्र में डूब गई है।
19) कुंभकर्ण कौन था?
उत्तर - कुंभकर्ण रावण का भाई था। वह एक महाबली था जो छह महीने सोता था।
20)हनुमान कौन सी बूटी लाए?
उत्तर - हनुमान संजीवनी बूटी लाए।
21) राम का राजतिलक किसने किया?
उत्तर -राम का राजतिलक मुनि वशिष्ठ ने किया।
22) सीता ने आपने गले का हार किसे दिया?
उत्तर - सीता ने आपने गले का हार हनुमान को दिया।

*** लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

1) लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्सी से क्यों की?

उत्तरः–लेखक ने राजप्पा के टिकट इकट्ठा करने की तुलना मधुमक्सी की है क्योंकि मधुमक्खी विभिन्न फूलों से रस इकट्ठा करती है उसी प्रकार राज्प्पा ने भी विभिन्न स्थानों और व्यक्तियों से टिकट इकट्ठा कर अपना अलबम तैयार किया है।

2) टिकट–अलबम का शौक रखने के राजप्पा और नागराजन के तरीके में क्या फ़र्क है?

उत्तरः–मधुमक्खी विभिन्न फूलों से रस इकट्ठा करती है उसी प्रकार राजप्पा ने भी विभिन्न स्थानों और व्यक्तियों से टिकट इकट्ठा कर अपना अलबम तैयार किया और नागराजन को उसके मामा ने बना–बनाया अलबम भेज दिया था।

3) राजप्पा को अब कोई क्यों नहीं पूछता था?

उत्तर- राजप्पा के पास अलबम था। उस अलबम के कारण उसे लड़के घेरे रहते थे, पर अब नागराजन के मामा ने उसे सिंगापुर से एक अलबम भेजा था। उस अलबम के कारण नागराजन को सभी घेरे रहते और राजप्पा को कोई नहीं पूछता था।

4) कविता में किस दौर की बात है? कविता से उस समय के माहौल के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर– कविता में वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौर की बात कही गई है। इस संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उस समय के माहौल के बारे में यह पता चलता है कि देश गुलाम था और लोगों के दिलों में देशप्रेम की ज्वाला भड़क रही थी। वे आजादी पाने के लिए लालायित थे।

5) भारतीयों ने अंग्रेजों को दूर करने का निश्चय क्यों किया था?

उत्तर- भारत कई सौ वर्षों तक गुलाम रहा। इस कारण यहाँ के लोग स्वतंत्रता के महत्त्व को भूल गए थे। इस आंदोलन से उन्हें स्वतंत्रता का महत्त्व को समझ में आ गया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि फिरंगी धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं। इस कारण भारतीयों ने अंग्रेज़ों को दूर भगाने का निश्चय किया।

6) झाँसी की रानी के जीवन से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं?

उत्तर- झाँसी की रानी के जीवन से हम देश के लिए मर मिटने, स्वाभिमान से जीने, विपत्तियों से न घबराने, साहस, दृढ़ निश्चय, नारी अबला नहीं सबला है आदि की प्रेरणा ले सकते हैं।

7) लेखिका को किस काम से खुशी मिलती है?

उत्तर- लेखिका को प्राकृतिक वस्तुओं को स्पर्श करने में खुशी मिलती है। वह चीज़ों को छूकर उनके बारे में जान लेती है। यह स्पर्श उसे आनंदित कर देता है।

8) मनुष्य का स्वभाव क्या है?

उत्तर- मनुष्य अपनी क्षमताओं की कदर नहीं करता। वह अपनी ताकत और अपने गुणों को नहीं पहचानता। वह नहीं जानता कि ईश्वर ने उसे आशीर्वाद स्वरूप क्या-क्या दिया है और उसका उपयोग नहीं कर सकता है। मनुष्य केवल उस चीज़ के पीछे भागता रहता है, जो उसके पास नहीं है। यही मनुष्य का स्वभाव है।

9) "प्रकृति का जादू" किसे कहा गया है?

उत्तरः- प्रकृति के अनमोल खजाने को, उसके अनमोल सौंदर्य और उसमें होने वाले नित्य-प्रतिदिन बदलाव को प्रकृति का जादू कहा गया है।

10) लेखक ने संसार को पुस्तक क्यों कहा है?

उत्तर- जैसे पुस्तक पढ़कर बहुत-सी जानकारी प्राप्त की जा सकती है, वैसे ही संसार में रहकर भी हमें बहुत-सी जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं। इसलिए लेखक ने संसार को पुस्तक कहा है।

11) लाखों-करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती कैसी थी?

उत्तरः- लाखों करोड़ों वर्ष पहले हमारी धरती बहुत गर्म थी और उस पर कोई जानदार चीज नहीं रह सकती थी। इसी कारण उस समय धरती पर मनुष्यों का अस्तित्व नहीं था। धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन होते गए और धरती में जानवरों और पौधे का जन्म हुआ।

12) आश्रम के निर्माण के समय कौन-सी घटना घटित हुई?

उत्तर- आश्रम के निर्माण के समय वहाँ आने वाले मेहमानों को तंबुओं में सोना पड़ता था। एक नवागत को पता नहीं था कि अपना बिस्तर कहाँ रखना चाहिए, इसलिए उसने बिस्तर को लपेटकर रख दिया और यह पता लगाने गया कि उसे कहाँ रखना है। लौटते समय उसने देखा कि गांधी जी खुद उसका बिस्तर कंधे पर उठाए रखने चले जा रहे हैं।

13) नौकरों के बारे में गांधी जी के क्या विचार थे?

उत्तर- गांधी जी नौकरों को भी अपने भाइयों के समान मानते थे। उनका विचार था कि नौकर वेतन लेने वाले मजदूर नहीं। हमें उनके साथ सदैव भाई जैसा व्यवहार करना चाहिए।

14) बाँस की बुनाई मानव के इतिहास में कब आरंभ हुई होगी?

उत्तरः- कहा जाता है कि इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। जरूरत के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं। कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकठ्ठा करता था। शायद भोजन इकठ्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी

किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो।

15) बाँस की बुनाई कैसे होती है?

उत्तर- बाँस की बुनाई वैसी ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को आड़ा-तिरछा रखा जाता है, फिर बाने को। बारी-बारी से ताने से ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे चेक का डिजाइन बनता है। पलंग की निवाड़ की बुनाई की तरह। टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूंथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है।

*** दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखो।**

1) भारतीयों ने अंग्रेजों को दूर करने का निश्चय क्यों किया था?

उत्तर- भारत कई सौ वर्षों तक गुलाम रहा। इस कारण यहाँ के लोग स्वतंत्रता के महत्त्व को भूल गए थे। इस आंदोलन से उन्हें स्वतंत्रता का महत्त्व को समझ में आ गया। उन्होंने यह भी महसूस किया कि फिरंगी धीरे-धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे हैं। इस कारण भारतीयों ने अंग्रेज़ों को दूर भगाने का निश्चय किया।

2)"जबकि इस नियामत से ज़िंदगी को खुशियों के इन्द्रधनुषी रंगों से हरा-भरा जा सकता है।" तुम्हारी नज़र में इसका क्या अर्थ हो सकता है?

उत्तरः- दृष्टि हमारे शरीर का कोई साधारण अंग नहीं है बल्कि यह तो ईश्वर प्रदत्त नियामत है। इसके जरिए हम प्रकृति निर्मित और मानव निर्मित हर एक वस्तु का आनंद उठा सकते हैं। ईश्वर के इस अनमोल तोहफ़े से हम अपना जीवन खुशियों से भर सकते हैं। अतः हमें ईश्वर का शुक्रगुजार होते हुए इसकी कद्र भी करनी चाहिए।

3) नेहरू जी ने पुत्री को क्या सलाह दी?

उत्तर- नेहरूजी ने पुत्री को कहा कि इंग्लैंड केवल एक छोटा-सा टापू है और हिंदुस्तान, जो एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनिया का एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनिया का कुछ हाल जानने का शौक है, जो तुम्हें सब देशों को और उन सब जातियों का जो इसमें बसी हुई हैं, का ध्यान रखना पड़ेगा, केवल उस एक छोटे-से देश का नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

4) आश्रम में कॉलेज के छात्रों से गाँधी जी ने कौन-सा काम करवाया और क्यों?

उत्तरः- आश्रम में कॉलेज के छात्रों से गाँधी जी ने गेंहूँ बीनने का काम करवाया। एक बार गाँधी जी से मिलने के लिए कॉलेज के कुछ छात्र आए थे। उन सभी को अपने अंग्रेज़ी ज्ञान पर बड़ा गर्व था। बातचीत के दौरान छात्रों ने उनसे कार्य माँगा छात्रों को लगा कि गाँधी जी उन्हें पढ़ने-लिखने से संबंधित कोई कार्य देंगें गाँधी जी उनकी इस मंशा को भाँप गए और गाँधी जी ने छात्रों को गेंहूँ बीनने का कार्य सौंप दिया। वास्तव में इस कार्य द्वारा गाँधी जी छात्रों को समझाना चाहते थे कि कोई कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता।

5) आश्रम में काम करने या करवाने का कौन-सा तरीका गाँधी जी अपनाते थे?

उत्तरः- गाँधी जी दूसरों से काम करवाने में बड़े सख्त थे। परन्तु अपने लिए काम करवाना उन्हें पसंद न था। वे अपना कार्य स्वयं करते थे उसमें वे किसी की सहायता भी नहीं लेते थे। गाँधी जी को काम करता देख उनके अनुयायी भी उनका अनुकरण कर कार्य करने लगते थे। इस प्रकार गाँधी जी अपने स्वयं के उदाहरण द्वारा लोगों को काम करने की प्रेरणा देते थे।

6) बाँस की बुनाई कैसे होती है?

उत्तर- बाँस की बुनाई वैसी ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को आड़ा-तिरछा रखा

जाता है, फिर बाने को। बारी-बारी से ताने से ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे चेक का डिजाइन बनता है। पलंग की निवाड़ की बुनाई की तरह। टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूंथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है।

7) बाँस की बुनाई मानव के इतिहास में कब आरंभ हुई होगी?

उत्तरः- कहा जाता है कि इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। जरूरत के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं। कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकठ्ठा करता था। शायद भोजन इकठ्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो।

8) नागराजन ने अलबम के मुख्य पृष्ठ पर क्या लिखा और क्यों? इसका असर कक्षा के दूसरे लड़के-लड़कियों पर क्या हुआ?

उत्तर- नागराजन के अलबम के मुख्य पृष्ठ पर लिखा था-ए एम नागराजन और नीचे की पंक्तियों में लिखा था इस अलबम को चुराने वाला बेशर्म है। ऊपर लिखे नाम को कभी देखा है? यह अलबम मेरा है। जब तक घास हरी है और कमल लाल, सूरज जब तक पूर्व से उगे और पश्चिम में छिपे, उस अनंत काल तक के लिए यह अलबम मेरा है, रहेगा। ऐसा इसलिए लिखा था ताकि उसे कोई चुराने की कोशिश न करे। यह अलबम हमेशा-हमेशा के लिए नागराजन के पास रहे। कक्षा के दूसरे लड़के-लड़कियों पर इसका यह असर हुआ कि उन्होंने इसे अपने अलबम और कॉपी में उतार लिया।

9) लेखक ने इस दुनिया की और इस दुनिया के छोटे-बड़े देशों की छोटी-छोटी कथाएँ लिखने का इरादा क्यों किया?

उत्तर- जब लेखक और उनकी पुत्री साथ-साथ रहते थे तो लेखक की पुत्री नेहरू जी से कई प्रश्न पूछा करती थी। नेहरू जी तब उसके प्रश्नों और बातों का उत्तर दिया करते थे। जब लेखक की पुत्री अपने पिता से दूर मसूरी में थी तो उन दोनों की बातचीत नहीं हो सकती थी। अतः लेखक ने बड़े सरल सहज तरीके से कई दुर्लभ जानकारियाँ देने के लिए इस दुनिया की और इस दुनिया के छोटे-बड़े देशों की छोटी-छोटी कथाएँ पत्रों के माध्यम से लिखने का इरादा किया।

10) गोल-चमकीला रोड़ा अपनी क्या कहानी बताता है?

उत्तर- गोल और चमकीला दिखाई देने वाला रोड़ा पहले ऐसा नहीं था। एक समय यह रोड़ा एक चट्टान का टुकड़ा था, जिसमें किनारे और कोने थे। वह किसी पहाड़ के दामन में पड़ा था। जब पानी के साथ बहकर वह नीचे आ गया और घाटी तक पहुँच गया। वहाँ से एक पहाड़ी नाले ने ढकेल कर उसे एक छोटे-से दरिया में पहुँचा दिया। पानी के साथ निरंतर ढकेले जाने के कारण उसके कोने घिस गए। दरिया उसे और आगे बहाकर ले गई। इस प्रकार की निरंतर प्रक्रिया के साथ वह गोल, चमकदार और चिकना हो गया।